

अनुक्रमणिका

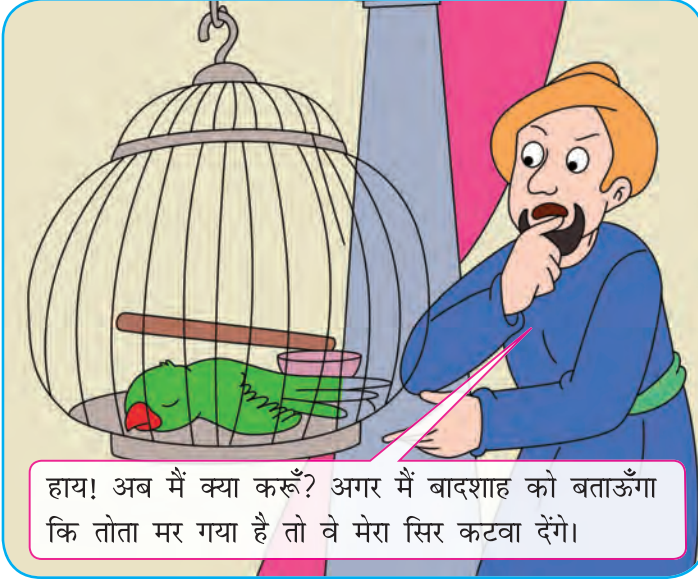
क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
	⊙ बादशाह का तोता (चित्रकथा)	5
1.	इतना ऊँचे उठो (कविता)	8
2.	स्वयं का निर्माण (लेख)	17
3.	वन : हमारी अमूल्य संपदा (निबंध).....	26
4.	उन्नति का मंत्र (कविता).....	36
5.	परिवर्तन (कहानी)	43
6.	प्रकाश (कहानी).....	50
7.	भक्ति के पद (कविता).....	57
8.	कान्हा अभ्यारण्य से पत्र (पत्र).....	65
9.	बहुरूपिया (कहानी).....	72
10.	हिरोशिमा की पीड़ा (कविता).....	79
11.	मुंबई : मायानगरी की यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)	86
12.	संचार के साधन (लेख).....	96
13.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता)	104
14.	सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र (संवाद)	110
	★ स्वमूल्यांकन पत्र-1	117
	★ स्वमूल्यांकन पत्र-2	119

बादशाह का तोता (चित्रकथा)

बादशाह अकबर का दरबार लगा था। तभी एक फकीर ने सुंदर तोता बादशाह को भेंट में दिया।



बादशाह की बात सुनकर सेवक बहुत अच्छी तरह तोते की देखभाल करने लगा लेकिन अचानक तोता मर गया।



हाय! अब मैं क्या करूँ? अगर मैं बादशाह को बताऊँगा कि तोता मर गया है तो वे मेरा सिर कटवा देंगे।

सेवक बीरबल के घर उससे मदद माँगने जाता है।

अब आप ही मुझे कोई उपाय बताइए।

तुम चिंता मत करो। बादशाह के पास जाओ, बाकी सब मुझ पर छोड़ दो।



सेवक बादशाह के दरबार में गया और डरते-डरते बोला—



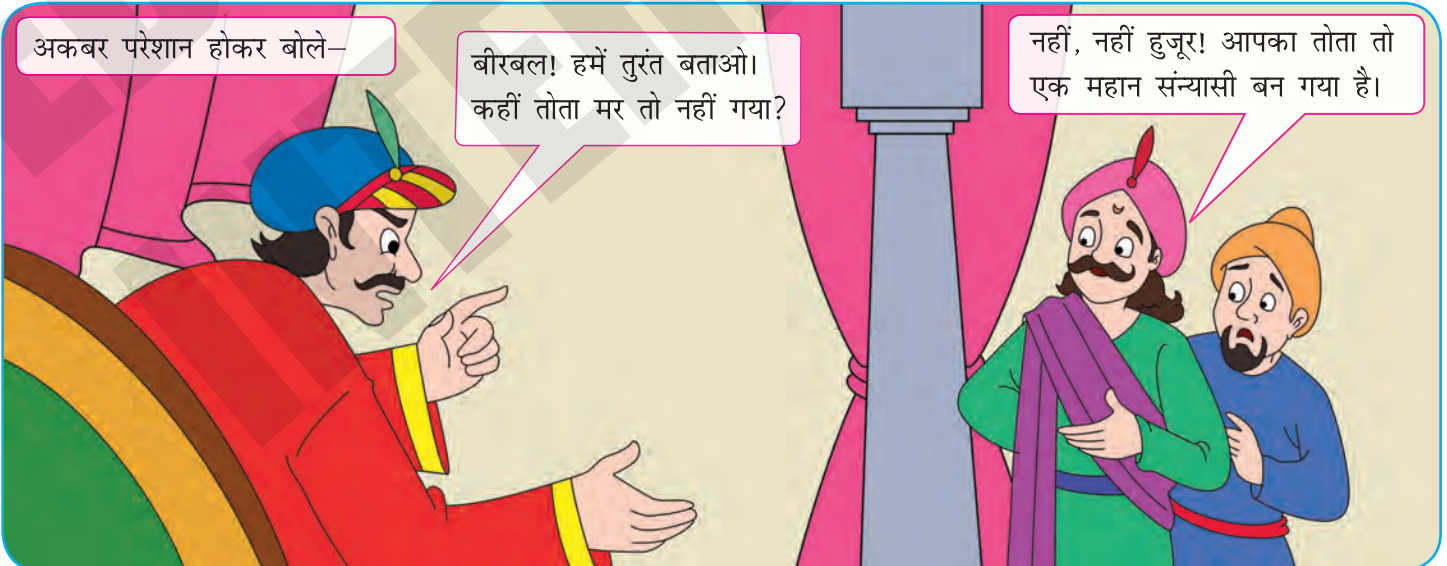
क्या हुआ उसे ?

हुजूर! आपका तोता...

उसी समय वहाँ बीरबल पहुँच जाते हैं, वे कहते हैं—

कुछ विशेष नहीं हुजूर लेकिन वह ...

अकबर परेशान होकर बोले—



बीरबल! हमें तुरंत बताओ। कहीं तोता मर तो नहीं गया?

नहीं, नहीं हुजूर! आपका तोता तो एक महान संन्यासी बन गया है।

अकबर गुस्से में बोले-



बीरबल, तुम साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते कि वह मर गया है।

हुजूर! इस प्रकार आप कह सकते हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि वह प्रार्थना कर रहा है।

अकबर घबराकर बोले-



चलो, हम उसे देखना चाहते हैं।



वहाँ पहुँचकर बीरबल ने तोते का पिंजरा अकबर के सामने रख दिया।

अरे! यह तो मर गया है। यदि तुम हमें पहले ही बता देते तो हम यहाँ आने का कष्ट ही क्यों करते?



हुजूर ! यदि मैं आपको यह ख़बर देता कि तोता मर गया है तो आप उस सेवक का सिर कटवा देते।



तभी बादशाह को ध्यान आया कि उन्होंने तोता देते समय यही बात कही थी। वह बोले -

वाह! बीरबल वाह! तुम वास्तव में बहुत चतुर और बुद्धिमान हो।

संदेश: हमें सदैव अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।





अध्याय

1

इतना ऊँचे उठो (कविता)



अध्ययन से पूर्व

तुम्हें पता है, हमारे देश में अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं।

हाँ, मुझे मेरी टीचर ने कक्षा में बताया था, कि भारत देश “विभिन्नताओं में एकता” वाला देश है।

मगर “विभिन्नता में एकता” इसका उद्देश्य क्या हो सकता है?



कविता का मूल तत्व

प्रत्येक मनुष्य को जाति, धर्म, वर्ग, लिंग इत्यादि के भेदभाव को छोड़कर केवल मानव कल्याण के लिए ही समर्पित रहना चाहिए।



इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है।
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से
सिंचित करो धरा समता की भाव-वृष्टि से।

जाति भेद की, धर्म-वेश की
काले-गोरे रंग **द्वेष** की
ज्वालाओं से जलते जग में

इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है।
लो **अतीत** से उतना ही जितना पोषक है
जीर्ण-शीर्ण का मोह मृत्यु का ही **द्यूतक** है।

तोड़ो बंधन, रुके न चिंतन
गति, जीवन का सत्य चिरंतन
धारा के **शाश्वत** प्रवाह में



इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।

चाह रहे हम इस धरती को स्वर्ग बनाना

अगर कहीं हो स्वर्ग, उसे धरती पर लाना।

सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे

सब हैं प्रतिपल साथ हमारे

दो कुंभ को रूप सलोना

इतने सुंदर बनो कि जितना आकर्षण है।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी



शब्दार्थ

शाश्वत = हमेशा रहने वाला

कुंभ = घट या मटका

द्वेष = शत्रुता की भावना

पक्षपात = भेदभाव

अतीत = बीता हुआ समय

द्योतक = सूचक



उच्चारण करें

प्रतिपल

आकर्षण

चिरंतन

गतिमय

प्रवाह

आकर्षण

भाव-दृष्टि

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका पाठ के माध्यम से बच्चों को संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सोचने के लिए प्रेरित करें।



अभ्यास कार्य



जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

- (क) हवा के समान गतिमय बनने का क्या अर्थ है?
 (ख) संसार में हम भेद-भाव रहित कैसे रह सकते हैं?
 (ग) प्रतिपल हमारे साथ कौन हैं?
 (घ) प्रस्तुत कविता के रचयिता का क्या नाम है?



जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- (क) प्रस्तुत कविता में 'शीतल बहने' का क्या अर्थ है?

 (ख) दुनिया को एक दृष्टि से देखना क्यों आवश्यक है?

 (ग) 'परिवर्तन के समान गतिमय' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

 (घ) 'ऊँचा उठने का तात्पर्य क्या है? कवि ऊँचा उठने की बात क्यों कह रहा है?

3. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

- (क) शीतलता किसके समान होनी चाहिए?

बादल के समान

पानी के समान

मलय पवन के समान

चाँद के समान

- (ख) जीवन का सत्य है।

अपरिवर्तन

परिवर्तन

स्थिरता

विस्थिरता



(ग) धरती को हमें कैसा बनाना है?

ब्रह्म लोक जैसा

मृत्युलोक जैसा

स्वर्ग लोक जैसा

परलोक जैसा

(घ) प्रस्तुत कविता का मूल तत्व क्या है?

मानव कल्याण

स्वयं कल्याण

दूसरों का कल्याण

4. सही मिलान कीजिए।

(क) धरा

(i) पवन

(ख) मलय

(ii) बंधन

(ग) तोड़ो

(iii) परिवर्तन

(घ) गतिमय

(iv) समता

5. कविता की पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(क) सब हैं प्रतिपल साथ हमारे।

.....

.....

(ख) लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है,

.....

.....

(ग) सिंचित करो धरा समता की भाव-वृष्टि से।

.....

.....

(घ) इतने गतिमान बनो जितना कि परिवर्तन है।

.....

.....

6. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) चिंतन -

.....

(ख) प्रतिपल -

.....

(ग) आकर्षण -

.....



(घ) अतीत -

(ङ) शाश्वत -



जरा सोचिए

Critical Thinking

7. आप जाति, धर्म अथवा वर्ण के आधार पर होने वाले भेदभाव को खत्म करने के लिए क्या करना चाहेंगे? अपने शब्दों में दस वाक्य लिखकर बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8. हमें किन बंधनों को तोड़कर चिंतन करना होगा और क्यों? कक्षा में विचार-विमर्श कर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....





छरा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

9. दिए गए शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।

- | | |
|---------------------|----------------------|
| (क) आकर्षण - | (ख) पत्राह - |
| (ग) र्जीण - | (घ) मेदभाव - |
| (ङ) वरीष्टी - | (च) जवाला - |
| (छ) सवर्ग - | (ज) परतीपल्ल - |

10. दिए गए वाक्यों में से संधियुक्त शब्दों को छाँटकर रेखांकित कीजिए।

- (क) संविधान में नागरिकों के कर्तव्यों को रेखांकित किया गया है।
- (ख) हमारी परंपरा महिमामयी, उत्तराधिकार विपुल और संस्कार उज्ज्वल हैं।
- (ग) मेरे पिता जी पराधीन भारत के निवासी थे।
- (घ) आईस्टीन की दृष्टि भविष्योन्मुखी थी।

11. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

- | | | |
|--------------------|-------|-------|
| (क) कुंभ - | | |
| (ख) गगन - | | |
| (ग) संसार - | | |
| (घ) दुनिया - | | |

12. दिए गए विलोम शब्दों का सही विकल्प चुनकर उत्तर बताइए।

- | | | | |
|--|---------------------------------|----------------------------------|-------------------------------------|
| (क) सत्य - <input type="checkbox"/> असत्य | <input type="checkbox"/> झूठ | <input type="checkbox"/> गलत | <input type="checkbox"/> सच |
| (ख) आकाश - <input type="checkbox"/> व्योम | <input type="checkbox"/> पाताल | <input type="checkbox"/> अंबर | <input type="checkbox"/> रसातल |
| (ग) जय - <input type="checkbox"/> जीत | <input type="checkbox"/> पराजय | <input type="checkbox"/> हार | <input type="checkbox"/> सब ठीक है। |
| (घ) ज्ञान - <input type="checkbox"/> विज्ञान | <input type="checkbox"/> अज्ञान | <input type="checkbox"/> संज्ञान | <input type="checkbox"/> अज्ञानी |



13. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) जो बहुत कठिनाई से मिलता हो

- दुर्लभ दुर्जीय
 दुर्लध्य दुर्दम्य

(ख) परलोक से संबंधित

- लौकिक पारलौकिक
 इहलौकिक आध्यात्मिक

14. दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

- (क) हार -
 हार -
- (ख) मेघ -
 मेघ -
- (ग) वारिश -
 बारिश -

15. दिए गए कारक-चिह्न लगाकर वाक्य पूरा कीजिए।

को से पर

- (क) हमें धरती भेदभाव रहित बनना चाहिए।
 (ख) दूसरों सदा ऊँचा उठाने का प्रयास करना चाहिए।
 (ग) हमें भव-दृष्टि संचित करना चाहिए।
 (घ) धरा परिवर्तन अटल है।
 (ङ) राग द्वेष रहित जीवन जीना चाहिए।



Creative Skills

16. आप जीवन में ऊँचा उठने के लिए क्या करना चाहेंगे? कक्षा में पक्ष-विपक्ष आधारित संवाद कीजिए।

- आप -
 अन्य -





स्वयं का निर्माण (लेख)



अध्ययन से पूर्व

हमें जीवन में किस चीज़ को अपनाना चाहिए?

किस चीज़ को छोड़कर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए?



मेरे प्यारे बच्चो! हमें, अवगुणों को छोड़ना चाहिए और सद्गुणों को अपनाना चाहिए।



लेख का मूल तत्व

हमें सदैव अवगुणों को त्यागने और सद्गुणों को अपनाने की चेष्टा करते रहना चाहिए।



यूनान के प्रख्यात दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति से ही समाज और समाज से ही व्यक्ति का निर्माण होता है। यदि व्यक्ति अपना सुधार करे तो समाज अपने आप सुधर जाएगा। व्यक्ति किस तरह स्वयं का निर्माण कर सकता है, सुधार कर सकता है, इस पाठ को पढ़कर जानते हैं।

आज व्यक्ति की नहीं बल्कि समाज के पुनर्निर्माण की चर्चा है। क्या व्यक्ति का पुनर्निर्माण एकदम उपेक्षा की चीज़ है? यह सत्य है कि व्यक्ति समाज की उपज है और यदि सारा समाज लूला-लँगड़ा रहे, तो एक व्यक्ति भी सीधा नहीं खड़ा हो सकता, किंतु फिर समाज भी तो व्यक्तियों का ही समूह है।

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने सुधार की ओर ध्यान दे तो पूरे समाज का निर्माण कितना आसान हो जाए!

बौद्ध धर्म में सम्यक् व्यायाम के चार अंग कहे गए हैं—

- ★ इस बात की सावधानी रखना कि अपने में कोई अवगुण न आ जाए।
- ★ इस बात का प्रयत्न करना कि अपने अवगुण दूर हो जाएँ।
- ★ इस बात का ध्यान रखना कि अपने में सद्गुण चले आएँ।
- ★ इस बात का प्रयास करना कि अपने सद्गुण चले न जाएँ।

बाग में यदि अच्छे फल-फूल न लगवाए जाएँ और ज़मीन को यों ही बेकार पड़ी रहने दिया जाए तो उसमें बेकार के झाड़-झंखाड़ उग ही आएँगे।

यदि अवगुणों को दूर करने और सद्गुणों को लाने का उपाय निरंतर नहीं किया जाएगा, तो अवगुण बने ही रहेंगे और सद्गुण नहीं आएँगे। इसलिए यदि इस चतुर्मुखी कार्यक्रम को घटाकर इसके केवल दो अंगों (अवगुणों को दूर करना और सद्गुणों को अपनाना) को स्वीकार कर लिया जाए तो भी मैं समझता हूँ कि भगवान बुद्ध का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

अवगुणों को दूर करना और सद्गुणों को अपनाना ये दोनों भी क्या अर्थ की दृष्टि से एक नहीं हैं? इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनों देना होगा।

एक आदमी को व्यर्थ बक-बक करने की आदत है। यदि वह अपनी आदत को छोड़ता है, तो वह अपने व्यर्थ बोलने के अवगुण को छोड़ता है, किंतु साथ ही और अनायास ही वह मितभाषी होने के सद्गुण को अपनाता चला जाता है। यह तो हुआ 'हाँ' पक्ष का उत्तर; किंतु एक दूसरे आदमी को सिगरेट पीने का अभ्यास है।



वह सिगरेट पीना छोड़ता है और उसकी बजाय दूध से प्रेम करना सीखता है, तो सिगरेट पीना छोड़ना एक अवगुण को छोड़ना है और दूध से प्रेम जोड़ना एक सद्गुण को अपनाना है। यह हुआ 'ना' पक्ष का उत्तर। अवगुण को दूर करने और सद्गुण को अपनाने के प्रयत्न में, मैं समझता हूँ कि अवगुणों को दूर करने के प्रयत्नों की अपेक्षा सद्गुणों को अपनाने का ही महत्व अधिक है। किसी कमरे में गंदी हवा और स्वच्छ वायु एक साथ रह ही नहीं सकती। कमरे में हवा रहे ही नहीं, यह तो हो ही नहीं सकता।

गंदी हवा को निकालने का सबसे अच्छा उपाय एक ही है। सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ खोलकर स्वच्छ वायु को अंदर आने देना।

ऐसी बातें पढ़-सुनकर हर आदमी वह बात कहता सुनाई देता है जो किसी समय बेचारे दुर्योधन के मुँह से निकली थीं—

“धर्म जानता हूँ, उसमें प्रवृत्ति नहीं। अधर्म जानता हूँ, उसमें निवृत्ति नहीं” एक आदमी को कोई कुलत पड़ गई— सिगरेट पीने की ही सही या फिर अत्यधिक सिनेमा देखने की ही सही। बेचारा बहुत संकल्प करता है, बहुत कसमें खाता है कि अब सिगरेट न पीऊँगा, अब सिनेमा देखने न जाऊँगा, किंतु समय आने पर जैसे आप ही आप उसके हाथ सिगरेट तक पहुँच जाते हैं और सिगरेट उसके मुँह तक। बेचारे के पाँव सिनेमा की ओर जैसे आप ही आप बढ़े चले जाते हैं।

क्या सिगरेट न पीने का और सिनेमा न देखने का उसका संकल्प सच्चा नहीं है? क्या उसने झूठी कसम खाई है? क्या उसके संकल्प की दृढ़ता में कमी है? नहीं, उसका संकल्प तो उतना ही दृढ़ है जितना किसी का हो सकता है। तब उसे बार-बार असफलता क्यों मिलती है?

इस असफलता का कारण और सफलता का रहस्य कदाचित् इस एक ही उदाहरण से समझ सकते हैं— ज़मीन पर एक छह इंच चौड़ा, और एक फुट लंबा लकड़ी का तख़्ता रखा है। यदि आपसे उस पर चलने के लिए कहा जाए तो आप चल सकेंगे? क्यों नहीं? बड़ी आसानी से। अब इसी तख़्ते के एक सिरे को किसी मकान की छत पर रख दिया जाए और शेष तख़्ते को यों ही आकाश में आगे बढ़ा दिया जाए और तब आपसे इसी तख़्ते पर चलने के लिए कहा जाए तो क्या आप तब भी उस पर चल सकेंगे? नहीं।

कोई पूछे क्यों। आप इसके अनेक कारण बताएँगे। सच्चा कारण एक ही है। आप नहीं चल सकते, क्योंकि आप समझते हैं, आप नहीं चल सकते। यदि आप विश्वास कर लें कि आप चल सकते हैं और उसी लकड़ी के तख़्ते को थोड़ा-थोड़ा ज़मीन से ऊपर उठाते हुए उसी पर चलने का अभ्यास करें तो आप उस पर बड़े आराम से चल सकेंगे। सरकस वाले पतले-पतले तारों पर कैसे चल लेते हैं? वे विश्वास करते हैं कि वे चल सकते हैं, तदनुसार अभ्यास करते हैं और वे चल ही लेते हैं।

यदि आप किसी अवगुण को दूर करना चाहते हैं तो उससे दूर रहने के दृढ़ संकल्प करना छोड़िए, क्योंकि जब आप उससे दूर-दूर रहने की कसमें खाते हैं तब भी आप उसी का चिंतन करते हैं। चोरी न करने का संकल्प भी चोरी का ही संकल्प है। पक्ष में न सही, विपक्ष में सही, है तो चोरी के ही बारे में। चोरी न करने की इच्छा रखने वाले को चोरी के संबंध में कोई संकल्प-विकल्प नहीं करना चाहिए।

हम यदि अपने संकल्प-विकल्पों द्वारा अपने अवगुणों को बलवान न बनाएँ तो हमारे अवगुण अपनी मौत आप मर जाएँगे।



आपकी प्रवृत्ति चंचल है। आप अपने 'गंभीर स्वभाव' की भावना करें। यथावकाश अपने मन में 'गंभीर-स्वरूप' का चित्र देखें। **अचिरकाल** में ही आपकी प्रवृत्ति बदल जाएगी।

यदि आपकी प्रवृत्ति अस्वस्थ है, तो आप अपने ही 'स्वस्थ स्वरूप' की भावना करें और यथावकाश अपने मन में अपने 'स्वस्थ स्वरूप' का चित्र देखें। अचिरकाल में ही प्रवृत्ति में परिवर्तन हो जाएगा।

शायद आपको गंभीरता, अस्वस्थ, शांति की उतनी आवश्यकता ही नहीं जितनी दूसरी लौकिक चीजों की है। उन चीजों की प्राप्ति में यह नियम निश्चयात्मक रूप से सहायक होगा, किंतु निर्णायक नहीं।

संसार में प्रत्येक कार्य अनेक कारणों से होता है। यदि दूसरे कारण एकदम प्रतिकूल हों तो अकेली भावना क्या करेगी? कोई तरुण अपने शरीर को बलवान बनाना चाहता है। खाने-पीने के साधारण नियमों का ख़याल नहीं करता, स्वच्छ वायु में नहीं सोता, व्यायाम नहीं करता, केवल भावना के ही बल पर बलवान होना चाहता है, यह असंभव है। भावना अपना काम करती है, किंतु अकेली भावना खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम सभी की जगह नहीं ले सकती।

जो बलवान बनने की सच्ची भावना करेगा वह अपने खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम की चिंता भी करेगा। इन अर्थों में भावना को स्वार्थ और साधिकार कहा जा सकता है।

सभी भावनाओं में श्रेष्ठ भावना एक ही है, जिसे जैन, बौद्ध, हिंदू सभी ने अपने-अपने धर्म-ग्रंथों में स्थान दिया है—

सभी के प्रति मैत्री, गुणियों के प्रति श्रद्धा, दुःखियों के प्रति दया, दुष्टों के प्रति उपेक्षा। सचमुच इससे बढ़कर ब्रह्म-विचार की कल्पना नहीं की जा सकती।

—भदंत आनंद कौशल्यायन

शब्दार्थ

उपेक्षा = तिरस्कार, अपमान
चतुर्मुखी = चारों ओर का
अचिरकाल = शीघ्र, तुरंत

प्रतिकूल = विपरीत
संकल्प = निश्चय, प्रण
सम्यक् = उपयुक्त, ठीक



उच्चारण करें

लौकिक प्रवृत्ति अनायास निवृत्ति विकल्प
निर्णायक

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को लेख के माध्यम से सदाचार व संयमित जीवन जीने के बारे में बताएँ।



अभ्यास कार्य



जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

- (क) गंदी हवा को निकालने का सबसे अच्छा उपाय क्या है?
- (ख) शरीर को मजबूत बनाने के लिए हमें क्या सावधानी रखनी चाहिए?
- (ग) अवगुणों को दूर करने के लिए हमें कैसा बनना चाहिए?
- (घ) बौद्ध धर्म में व्यायाम के कितने अंग बताए गए हैं?



जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- (क) स्वस्थ स्वरूप के लिए हमें किस-किस चीज़ की आवश्यकता है?
.....
- (ख) हमें अपने अवगुणों को दूर करने के लिए क्या करना होगा?
.....
- (ग) हमारे अवगुण अपनी मौत कैसे मर जाएँगे?
.....
- (घ) समाज का निर्माण किस प्रकार होता है?
.....

3. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

- (क) प्रवृत्ति -
- (ख) अवगुण -
- (ग) धर्म -
- (घ) भावना -



4. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

व्यक्तियों सामाजिक समाज दार्शनिक

- (क) समाज का समूह है।
 (ख) व्यक्ति से और समाज से का निर्माण होता है।
 (ग) मनुष्य एक प्राणी है।
 (घ) अरस्तू यूनान के प्रख्यात थे।

5. दिए गए वाक्यों को पढ़कर (✓) या (×) का चिह्न लगाइए।

- (क) अरस्तू यूनान के लेखक थे।
 (ख) समाज व्यक्ति और चीजों से बनता है।
 (ग) समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने में सुधार कर समाज सुधार सकता है।
 (घ) प्रस्तुत लेख का शीर्षक स्वयं का निर्माण है।

6. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

- (क) गौतम बुद्ध अनुयायी थे।
 जैन धर्म के बौद्ध धर्म के हिंदू धर्म के पारसी धर्म के
- (ख) अरस्तू दार्शनिक थे।
 इटली के पोलैंड के यूनान के भारत के
- (ग) सरकस वाले पतले-पतले तारों पर कैसे चल लेते हैं?
 अभ्यास द्वारा विश्वास द्वारा स्वयं द्वारा सबके द्वारा
- (घ) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह कथन है-
 थार्नडाइक का अरस्तू का प्लूटो का जॉन डीवी का

7. सही मिलान कीजिए।

- (क) प्रतिकूल (i) अवगुण
 (ख) सद्गुण (ii) विशेष
 (ग) साधारण (iii) तुच्छ
 (घ) श्रेष्ठ (iv) अनुकूल



8. बौद्ध धर्म के चार व्यायाम लिखिए

(क)

(ख)

(ग)

(घ)



जरा सोचिए

Critical Thinking

9. अवगुणों को छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प किस प्रकार सहायक है? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

10. सभी के प्रति मैत्री, गुणियों के प्रति श्रद्धा व दुखियों के प्रति दया न होने से क्या ब्रह्म विचार की कल्पना संभव है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....



जरा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

11. दिए गए शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए।

(क) व्यायाम -

(ख) संकल्प -

(ग) प्रवृत्ति -

(घ) प्राणी -



12. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

- (क) अच्छा - (ख) स्वच्छ -
 (ग) असफल - (घ) गंभीर -

13. संधि-विच्छेद कीजिए।

- (क) सद्गुण - (ख) प्रतिकूल -
 (ग) प्रवृत्ति - (घ) प्रत्येक -

14. दिए गए मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

- (क) गंगा नहाना -
 (ख) आँसू पोंछना -
 (ग) उल्टी गंगा बहाना -
 (घ) कसौटी पर कसना -

15. दिए गए शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

- (क) व्यायम - (ख) असभवं -
 (ग) व्यकृति - (घ) वर्थ -

16. दिए गए समस्त पद का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए।

समस्त पद	विग्रह	समास का नाम
(क) महावीर
(ख) चतुर्भुज
(ग) आजीवन
(घ) महात्मा

17. दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

- (क) अरि -
 अरी -
 (ख) शांत -
 सांत -
 (ग) अपेक्षा -
 उपेक्षा -



- (घ) आदि -
 आदी -
 (ङ) प्रकृति -
 प्राकृत -

18. दी गई लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

- (क) अधजल गगरी छलकत जाय।

 (ख) इस हाथ दे, उस हाथ ले।

 (ग) जैसी करनी, वैसी भरनी।

 (घ) एक कहो, न दस सुनो।



जरा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

19. 'विचारों का जीवन से संबंध' पर अनुच्छेद-लेखन कीजिए।

.....

20. 'गौतम बुद्ध' के विषय पर जानकारी एकत्रित कर अपनी कक्षा में चर्चा करें।



जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

21. जिस प्रकार समाज और व्यक्ति एक-दूसरे के पूरक हैं, उसी प्रकार सद्गुण और दृढ़ता भी। आप एक बेहतर समाज का निर्माण किस प्रकार करना चाहेंगे?

